मासिक—

मानव मन्दिर

सम्पादक :

एम० आर० भक्त
बी. एस. ई. (रीटायर्ड)

वर्ष 8 | सोमवार 10 अगस्त 1981 | संख्या 4

कश्मीर में प्रवचन,

सत्संग हज़ूर परम दयाल जी महाराज, श्रीनगर कश्मीर।

दिनांक १२-५-८१

आली री गुरु भक्ति विना, नर जीवन निष्फल।
मानुष तन का भक्ति है भूषण, प्रेम, प्रीति सिंगारा।
श्रद्धा, दया, क्षमा चित वाढ़े, सूझे पर उपकारा।
बुद्धि मन सब हों निर्मल।

काम, क्रोध और लोभ, मोह, मद, त्याग डाह, हंकारा।
जो निष्काम करे गुरु भक्ति, सूझे ज्ञान विचारा॥
फंसे नहीं जग के दलदल।

परमारथ के मग में पग धर, सुधर जाये व्यौहारा।
लोक में यश, परलोक में आनन्द, जीवन मुक्ति निहारा॥
काल माया कर्म निर्बल।

जीते जी तन रहते पावे, निज स्वरूप का दर्शन।
जब यहां दर्शन तत्त्व प्राप्त हो, आगे भी वही लक्षण॥
मिला मानुष तन का फल।

राधास्वामी गुरु ने मौज दिखाई, सत्संग सार सुझाया।
अपनी आंखों देख लिया सब, भक्ति, मुक्ति का सारा॥
भया सन्तमत में निश्चल।

मैं ईश्वर, परमेश्वर, राम, कृष्ण देवी और देवताओं के मानने वाला ब्राह्मण था। दाता के दरबार में गया तो दाता ने मुझको गुरुमत फ़कीर-मत की भक्ति की शिक्षा दी और कहा कि अगर तू मालिक को मिलना चाहता है तो फ़कीर बन जा। एक शब्द में वह मुझे लिखते हैं :—

मैं नहिं राम, कृष्ण का सेवक, ईश ब्रह्म नहिं जानूं,
मैं फ़कीर का नाम दिवाना, सब से बढ़ कर मानूं।
जो फ़कीर मोहि दरशन देवे अपना भाग सराहूं।
अपने तन के चाम की जूती, पग फ़कीर पहनाऊँ।
एक घड़ी साधु की संगत, कटे मोह जम फांसी।

ऐसे-२ शब्द थे। वह कहते हैं कि गुरुभक्ति के बिना जन्म निष्फल हो जाता है। मेरे लिए यह गुरुमत एक नयी वस्तु थी। मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि क्या जो यह लिखा है ठीक

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

लिखा है क्या ईश्वर भक्ति बुरी है ? दाता ने गुरु भक्ति क्यों कहा ? मैं सन्तों के साथ खामोखा हाँ में हां मिलाने वाला नहीं। फिर भी मैं कहता हूं कि जो कुछ यह लिखा है, यह ठीक है। ईश्वर क्या वस्तु है ? जो वस्तु ऐश्वर्य वाली, प्रभाव वाली और शक्ति वाली है, वह ईश्वर है। मगर जब तक कोई व्यक्ति किसी को यह न बताये कि तू अपने अन्दर शक्ति व प्रभाव कैसे प्राप्त कर सकता है तो उसके अन्दर शक्ति व प्रभाव कैसे पैदा हो सकता है। यदि एक व्यक्ति केवल ईश्वर की भक्ति करता रहे, उसको यह मालूम नहीं कि मैंने अपने आप को प्रभावशाली कैसे बनाना है, कैसे ख्याल व विचार मैंने करने हैं, तो उसे ईश्वरीय भक्ति का कोई लाभ नहीं। अब आप गुरु का अर्थ समझ रहे होंगे कि मैं अब क्या कह रहा हूं ? गुरु ज्ञान, समझ और विवेक का नाम है। हम संसार में पैदा होते है, अगर बच्चे को समझ-बूझ का कोई संस्कार न दिया जाये तो वह मूर्ख रहेगा। गुरु समझ देता है कि तुमने कैसे ख्याल और विचार रखने हैं तथा अपने जीवन को कैसे बनाना है :—

गुरु विन माला फेरते, गुरु विन देते दान।
गुरु विन नाम हराम है, जाय पूछो वेद, पुराण।

जिस प्रकार संसार में इञ्जोनीयरिंग व मैडीकल साईंस भी गुरु है और संसार में और कामों का भी गुरु है, इसी प्रकार मानवीय जीवन व शरीर को बनाने के लिए भी गुरु है। गुरु तत्त्व है, सच्ची समझ है। गुरु किसी व्यक्ति का नाम नहीं है। आदमी गुरु नहीं हो सकता। आदमी ने उस गुरु तत्त्व को बताना है, उस सच्चे व वास्तविक गुरु का पता देना है। बाहरी गुरु की भक्ति क्या है :—

दर्शन करे बचन पुनि सुने, सुन-२ कर नित मन में गुने।
गुन-२ काढ़ लेवे तित सारा, काढ़ सार तिस करे आहारा।
कर आहार पुष्ट हुआ भाई, जग भव भय सब गई गवांई।

किसी योग्य व्यक्ति के सत्संग में बैठ कर अपने को बदल लेना, यह वास्तविक गुरु भक्ति है। यह मैं आपको सांसारिक ढंग से बता रहा हूं।

अतः गुरु भक्ति क्या है? हम गुरु भक्ति क्यों करें?

यदि तुम गुरु की आज्ञा के बिना ईश्वर की पूजा करना चाहते हो तो तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा। केवल एक कल्पित प्रसन्नता मिलेगी। अतः गुरु भक्ति की महिमा है।

अगर आज मुझे यह सच्चाई न मिलती तो शायद मैं राधास्वामी मत या गुरुमत वालों के विरुद्ध वह ज़हर उगलता कि संसार याद करता कि उन्होंने हमें धोखा दिया है। मगर मेरा अनुभव मुझे गुरुमत को सत्य मानने के लिए विवश करता है। गुरु समझा देता है तथा बताता है कि तुमने अपने ईश्वर को, अपने मन को तथा अपने आप को पवित्र रख कर कैसे जीवन बिताना है। जब हम उसके कहने पर अमल करके अपने विचारों को शुद्ध रखेंगे तो हमें हर प्रकार की सफलता होगी वरना केवल ईश्वर-ईश्वर करने या राम-राम करने से या केवल माला जपने से यदि कोई यह कहे कि मेरा जीवन सफल हो जायेगा, यह हो नहीं सकता। बहुत सूक्ष्म विचार दे रहा हूं जो समझने वाले हैं वे समझें। जो गुरु को केवल बाहरी प्रेम करते हैं उनका भी यही हाल

होता है। इस से भी कुछ देर का सुख व प्रसन्नता उनके हाथ आयेगी। मन को आनन्द मिलेगा मगर इससे उनका जीवन सफल नहीं हो सकता :—

मानुष तन का भक्ति है भूषण, प्रेम प्रीति सिंगारा।

कहते हैं कि मानवीय शरीर का गहना क्या है ? भक्ति ! भक्ति किस की ? भक्ति गुरु की। गुरु बताता है कि ऐ मानव ! ईश्वर तुम्हारे अन्तर है। वह उपाय बताता है कि तू किस उपाय से प्रकृति के इस भेद से लाभ उठा सकता है। ईश्वर को अपने वश कैसे कर सकता है। अपने मनोबल, इच्छा-शक्ति को कैसे बढ़ा कर तथा अपने विचार को कैसे शुद्ध व पवित्र करके अपने मन को शान्ति दिला सकता है तथा जीवन को सुधार सकता है। जीवन गुरु की बात को सुन कर, अमल करने से सुधर जाता है और वह बात सब के लिए नहीं है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की प्रकृति भिन्न है। जब तक कोई गुरु किसी व्यक्ति की प्रकृति को नहीं समझता और उसकी कठिनाई को अनुभव नहीं करता और यूं ही परामर्श देता है, वह ग़लत है। जैसे आप

डाक्टर के पास जाते हैं, डाक्टर आपके सारे हालात को देखता व सुनता है फिर वह औषधि बताता है। वह ऐसा यूं ही तो नहीं करता । ऐसे ही संसार में गुरु वह है जो मानव की प्रकृति को study करके उसे वैसी ही आज्ञा दे जो प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक नहीं है ।

संसार ने गुरुमत को नहीं समझा । संसार तो केवल इतना समझता है कि जाओ और नाम ले आओ। गुरु के पास जाकर उसको अपनी कठिनाइयाँ व हालात बयान करो, उन हालात के अनुसार वह जो ठीक समझेगा वह उसको वही आज्ञा देगा। उसे व्यक्ति की प्रकृति का अध्ययन करना पड़ता है :—

श्रद्धा, दया, क्षमा चित वाढ़े, सूझे पर उपकारा।

गुरु की संगति में जाकर क्या होता है ? व्यक्ति के अन्दर प्रेम व मुहब्बत पैदा होती है। हमारा प्रेम मार्ग है। गुरु ने हमें क्या बताया ? प्रेम करो, द्वेष मत करो। जहां तक हो सके सब के साथ प्रेम करो। क्यों ? क्योंकि प्रेम के विचारों में बड़ी भारी शक्ति है।

फिर क्षमा और दया स्वयं आ जाती है तथा क्षमा और दया के करने के कारण मानव के मन में पवित्रता आ जाती है, जिसके कारण दूसरों का भी भला होता है।

श्रद्धा, दया, क्षमा चित बाढ़े, सूझे पर उपकारा।
बुद्धि मन सब हों निर्मल ।

यह संस्कार कौन देता है ? गुरु देता है। ईश्वर ने तुमको यह नहीं कहना कि तुम परोपकार करो व ब्रह्म ने तुमको आकर यह नहीं कहना कि तुम प्रेम करो, तुम को यह शिक्षा देने वाला कोई मानव होगा जो तुम्हारे जैसा होगा। लोग निराकार की भक्ति करते हैं या साकार की करते हैं। यह साकार व निराकार दोंनों मन के ही खेल हैं। भक्ति गुरु की करनी है। मैंने आप को बता दिया कि गुरु की भक्ति है। जो लोग गुरुभक्ति को न समझ केवल ध्यान ही करते रहते हैं तथा जो गुरु कहता है उस पर कोई विचार नहीं करते तो उनको भी केवल मन का आनन्द व मानसिक आनन्द मिलेगा। कुछ इच्छा शक्ति बढ़ जायेगी किन्तु उनका जीवन सफल नहीं हो सकता।

काम, क्रोध और लोभ, मोह, मद, त्याग डाह हंकारा,
जो निष्काम करे गुरु भक्ति, सूझे ज्ञान विचारा ।
फंसे नहीं जग के दलदल ।

वह कहते हैं कि गुरुभक्ति निष्काम होनी चाहिए । आप लोग गुरु के पास जाते हैं कि पुत्र नहीं है, हम भूखे हैं, यह नहीं है । ऐसे कर्म करने वालों की जन्म-मरण से खलासी नहीं हो सकती, बिलकुल नहीं । मैंने केवल गुरुमत को समझने के लिए ही सारा जीवन खो दिया । स्वामी जी महाराज या दाता दयाल जी के पास यह कहने का क्या अधिकार था :—

मैं ईश ब्रह्म नहीं जानूं । मैं फ़कीर का नाम दिवाना,
सब से बढ़ कर मानूं ।

फ़कीर कौन हैं ? गुरु, साधु या सन्त का नाम फ़कीर है । उसकी संगति में जाने से, उसकी बातों को सुन कर के तथा उसकी आज्ञा मानकर मानव का लोक और परलोक सुधरता है । मैं आपके सामने बैठा हूं । मेरा लोक और परलोक सुधर

गया। मेरे जीवन में बहुत कठिनाइयां आती रहीं, प्रत्येक व्यक्ति को आती हैं। मुझे जब भी किसी प्रकार का कष्ट होता तो दाता को लिख देता। वह जो कहते सो मैं करता। कभी नहीं सोचा कि उसका परिणाम क्या होगा। तो अब देख लो अब मैं वादशाहाना (राजा जैसा) जीवन व्यतीत करता हूं। मेरा जीवन वहुत अच्छा है। रोटी अच्छी मिलती है, इज़्ज़त है, मान है। मेरे पास सब कुछ है। मुझे यह क्यों हुआ? क्योंकि मैंने गुरु की आज्ञा का पालन किया। इसलिए जो गुरुमत में शामिल हैं उनको मैं यह कहूंगा कि भई! गुरु से राय लो, समझ लो तथा अपने कष्ट उस को बताओ। वह जो कुछ कहता है उस पर अमल करो। बुद्धिमान् गुरु के दो काम होते हैं—जिस कष्ट या ख्याल में आदमी उलझा हुआ होता है या तो उसको जो इच्छा है उसको पूरा करने का उसे आश्रय देता है या उसको इस प्रकार का ख्याल देता है कि उसकी वह इच्छा ही चली जाये। वह या तो ऐसा उपाय करेगा कि उसकी इच्छा पूरी हो जाये या उसको ऐसा उपाय बतायेगा

कि उसकी वह इच्छा ही चली जाये। एक कथा है कि एक व्यक्ति किसी लड़की से प्रेम करने लग गया। वह उसको मिलना चाहता था। वहां मेला था। मेले में एक साधु बैठा हुआ था। वह उस साधु के पास चला गया। अब यदि साधु उसे इस ख्याल को छोड़ने को कहता तो क्या वह मानता? वह तो केवल इसलिए गया था कि मुझे वह लड़की मिल जाये। साधु ने उसे क्या कहा? उसने कहा कि यह औषधि तुम ले जाओ। तुम किसी भी ढंग से उस लड़की को खिला दो। उसने वह औषधि उसे मिठाई में खिला दी। उस लड़की को दस्त लग गये। वह जमालगोटा था। वह लड़की बीमार हो गई। फिर साधु ने कहा कि एक बात कहता हूं कि यह औषधियां मैं तुम्हें देता हूं। तुम वैद्य बन जाओ कि मैं हकीम हूं। वह लड़की जब मरने वाली हो गई लोगों ने कहा अब बचेगी नहीं। यह साधु कहता है तो इसका भी इलाज करवा लो। वह उसके पास आया। जब उसने उस लड़की को देखा उसका वह यौवन, जिस

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

का वह प्रेमी था वह तो सब नष्ट हो गया। उसने औषधि दी कि जिससे उसके दस्त बन्द हो जायें। वापिस आया तो साधु ने पूछा—क्यों भई! देख आया? महाराज! देख आया। मैं भर पाया। मुझे अपना शिष्य बना लो। अतः गुरु वह है कि जिस कष्ट में मानव फंसा हुआ है या तो उसको कष्ट से मुक्त करने का कोई उपाय वताये या जो उसकी इच्छा है उसे पूरा करने का उपाय वताये। यदि उसकी वह इच्छा पूरी नहीं होती है तो गुरु उसका वह ख्याल ही दूर कर दे। यह गुरुमत है। बस, गुरुमत की इतनी ही बात है और कुछ नहीं। इसके सिवाय गुरुमत और कुछ नहीं। मैं यह सांसारिक बातें कह रहा हूं।

परमारथ के मग में पग धर, सुधर जाये व्यौहारा
लोक में यश, परलोक में आनन्द, जीवन मुक्ति विहारा।
काल माया करम निर्बल।

परमार्थ अर्थात् मानव के जीवन का परम अर्थ क्या है? यह मैं पहले सत्संग में बहुत बता चुका हूं। जो अभ्यासी हैं उनको चाहिए कि वे अपनी

सुरत को गुरु के रूप में या प्रकाश में या सुमिरन में गाढ़ दें। जिस प्रकार हम नमदे में सूआ गाढ़ देते हैं। वह जो गढ़ जाने की अवस्था होगी उसमें आप को क्या होगा ? तुम सब कुछ भूल जाओगे। उसमें आपको आनन्द मिलेगा। जब इस समाधि से उठोगे तो तुम प्रसन्न होगे। जिस प्रकार गहरी नींद में सो जाने के बाद आप उठते हो तो अपने आप को ताज़ा (Fresh) अनुभव करते हो। इसी प्रकार यह साधन जो बताया जाता है यह जीवन को तरोताज़ा (Fresh) करने के लिए बताया जाता है। गहरी नींद के बाद हम उठते हैं तो हम (Fresh) हो जाते हैं। इसी प्रकार आप जो अभ्यास करते हैं। मैं नहीं कहता कि तुम राधास्वामी मत के हो जाओ। किसी भी मत के हो मेरा इन बातों से झगड़ा नहीं है। जब तुम अपने अन्तर में साधन करते हो तो अपने ध्यान को रूप में या प्रकाश में या शब्द में लय करने का प्रयत्न करो। यदि आप दो मिनट के लिए भी लय हो जायेंगे तो दो घण्टे के अभ्यास की अपेक्षा वह दो मिनट का अभ्यास आपको शान्ति देगा। शरीर हल्का हो जायेगा तथा प्रसन्नता

मिलेगी। जो व्यक्ति इस प्रकार से अपने मन को एकाग्र करता हैं उसे क्या हो जाता है ? वह अपने मन को वश में कर सकता है। मन अपनी चंचलता को छोड़ जाता है। जब मन अपनी चंचलता को छोड़ जायेगा फिर क्या होगा ? वह सही विचार करेगा, Correct thinking में आ जायेगा। उसका मस्तिष्क सन्तुलित (Balance of mind) हो जायेगा तथा वह बात को समझने के योग्य हो जायेगा। तुम देखो, जो लड़का पाठशाला में मास्टर के Lecture को ध्यान से सुनता है उसको अधिक परिश्रम की आवश्यकता नहीं पड़ती क्योंकि वह यकसू (जिज्ञासु) हो जाता है तथा उसको बात समझ में आ जाती है। इसी प्रकार जो व्यक्ति अभ्यास करता है और यदि उसकी समाधि लगती है तो जो भी सांसारिक बात है उसके भेद को वह समझ जाता है तथा उस भेद के समझने से उसके जीवन का व्यवहार भी ठीक हो जाता है। मैं आपको जो कुछ कह रहा हूं, क्रियात्मक जीवन का पाठ पढ़ा रहा हूं। जीवन को अच्छे गुजारने का तरीका बता रहा हूं। (How to live, How to pass your life happily) ? अर्थात्

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

तुम्हारा जीवन कैसे सफल होगा और प्रसन्नता से कैसे गुजरेगा। आगे वह कहते हैं :—

"जीवन मुक्ति विहारा" इससे पहले कि मैं आप लोगों से कहूं, मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि क्या तूने जीवन्मुक्ति प्राप्त कर ली अगर कर ली तो किस प्रकार से की ?

मैं गुरु के चरणों में गया था। बात मेरी समझ में नहीं आती थी। उन्होंने भेद बताने के लिए मुझे यह काम दिया था जिससे मैं राधास्वामी मत की ऊंची मंज़िल, राधास्वामी धाम व अनामी धाम या अजायब पुरुष को समझ सकूँ। इससे मुझे मन व माया के रूप को समझ आई। मैं समझ गया कि मेरे मन के अन्तर जो कुछ किसी प्रकार की भी फुरना होती है यह माया है, कल्पना है, है नहीं। इस ज्ञान से जो कुछ मेरे साथ जीवन में गुज़रता है मैं उसे कल्पित समझ कर उसमें फंसता नहीं और मन के चक्कर में नहीं आता। इससे जीवन में जो मेरे बन्धन हैं वे मुझे वश में नहीं कर सकते। अत:

मैं जीवन्मुक्त हो गया। मुझे मालूम नहीं कि दाता दयाल व राधास्वामी दयाल या सनातनियों की जीवन्मुक्ति क्या है? मैंने जो जीवन्मुक्ति समझी वह यह है; कि अभ्यास करता हूं, अब तो मैं मन को छोड़ जाता हूं। पहले मैं जीवन्मुक्त नहीं था। अभ्यास करते समय कोई ऐसा वैसा गन्दा विचार आ जाता तो रोता पीटता और क्रोध में आकर दीवार को सिर मारता था, तम्बूरा अपने सिर पर दे मारता, मेरे साथ क्या हो गया मैंने इस प्रकार दो तम्बूरे तोड़ दिये, तब मैंने दाता दयाल को लिखा कि आपने तो मुझे फ़कीर बना दिया मगर मेरे में ये दोष हैं। उन्होंने मुझे लिखा कि फ़कीर! जिसने तुमको फ़कीर बनाया है वह फ़कीर बना कर ही छोड़ेगा। मगर तुम में सांसारिक इच्छाएं हैं। सांसारिक वासनाओं से मुझे छुटकारा कैसे मिला? जब से मुझे जीवन में यह अनुभव हुआ कि इस संसार में, जिसमें हम रहते हैं, हमारा पिछले जन्म का लेना देना होता है। कोई पिता बन कर लेता है, कोई पुत्र बन कर और कोई गुरु बन कर लेता है। नहीं तो जिसका देना होता है वह चोरी करके या डाका मार कर ले जाता है। जो

कर्म किये हुए हैं उनका भुगतान भुगतना पड़ता है। जिससे मैंने लेना है, लेना है। जिसको मैंने देना है, देना है। इस सम्बन्ध में कई एक अनुभवों से मुझे इसका पूर्ण विश्वास हो गया है। इस ज्ञान से मुझे संसार के प्रतिदिन के झगड़ों से शान्ति मिल गई। अब मैं चिन्ता नहीं करता। मैंने जो कुछ पिछले जन्म के कर्म किये हुए हैं, जितना जो कुछ मेरा भुगतान भुगतना है, भुगतेगा। Why to bother myself? अगर यह ज्ञान हो जाये तो हम लोगों को जितने कष्ट होते हैं और जिनसे हम प्रतिदिन घरों में झगड़ा करते हैं कि अमुक व्यक्ति ने मेरे से शत्रुता की, अमुक ने यह किया इत्यादि, इन सब से तुमको शान्ति मिल जाये। यह जितना संसार है "कर्म प्रधान विश्व कर राखा, जो जस कीन तस फल चाखा"। हमने जो कर्म किये हुए हैं उनके फल से कोई बच नहीं सकता। इस ज्ञान से मानव तरद्दुद अर्थात् चिन्ता, फिक्र व हाय-हाय नहीं करता। वह समझता है कि जो कुछ हो रहा है ठीक हो रहा है। मुझे इस ज्ञान से शान्ति मिली और इस प्रकार मेरा लोक सुधर गया। जाग्रत में तो

मैं मन के चक्कर में नहीं आता मगर स्वप्न में कभी तो मुझे यह याद रहता है कि मैं स्वप्न देख रहा हूं और कभी-कभी मुझे याद नहीं रहता। मुझे क्या पता कि अन्त समय मेरा क्या हाल हो :—

जीते जी तन रहते पावे, निजस्वरूप का दर्शन।
जब यहां दर्शन तत्त्व प्राप्त हो, आगे भी वही लक्षण।
मिला मानुष तन का फल।

दाता का निज स्वरूप से क्या मतलब है, यह मुझे मालूम नहीं। मैंने निजस्वरूप का दर्शन क्या पाया ? मैं जब अभ्यास करता हूं या अकेला होता हूं तो मन के चक्कर को छोड़ जाता हूं। आगे प्रकाश और शब्द है। यदि मैं कहूं कि मेरा रूप, प्रकाश और शब्द है यह ग़लत है। मैं और हूं तथा प्रकाश और शब्द और हैं। वह जो अपना रूप है, वह मेरा निजस्वरूप है। वही सच्चा गुरु है। वही अपना गुरु है। मगर यहां तक साधारण मानव पहुंच नहीं सकता। अत: साधारण जनता के लिए शिवसंकल्प-मस्तु, मार्ग है। घरों में प्रेम रखो, शान्ति रखो, विषय विकार का जीवन कम करो, अच्छी सन्तान

पैदा करो, दुःखियों की सहायता करो, उनकी शुभ भावनाएं लो तथा निष्काम कर्म करो। ये बातें तुमको कौन बताता है ? गुरु बताता है। ईश्वर या ब्रह्म ने आकर तुमको यह नहीं कहना कि तुम दान दो और दुःखियों का आशीर्वाद लो। अतः गुरु की महिमा है। मगर वास्तविक गुरु का क्या रूप है ? वह मन के ख्यालात के तबके से परे रहता है, दूसरे शब्दों में वह काल और माया के परे रहता है। दाता का एक शब्द है :—

साधु गुरु का रूप लखाऊँ।
जो कोई आवे मेरी सभा में, गुरु का रूप लखाऊँ,
सत रज तम की हद से बाहर, गुरु मूरति दरसाऊँ।
निर्गुन सगुन देह नहीं जाके, अद्भुत भेद जताऊँ,
हाड़ मांस नाड़ी नहीं जाके, वाके रूप न नाऊँ।
सबका सबमें सब से न्यारा, मरम विचित्र जताऊँ,
रूप अरूप स्वरूप अनूपा, निराकार ठहराऊँ।
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी,पल-पल गुरु गुन गाऊँ।

जो सारा जीवन यह समझता रहता है कि मेरा गुरु फ़कीरचन्द या महर्षि जी हैं वह ग़लती पर है। बाहरी गुरु का यह कर्त्तव्य है कि जीव को वास्तविक

गुरु का पता दे दे। सच्चाई बताकर उसे बहिर्मुखी से अन्तंमुखी कर दे। जो गुरु ऐसा नहीं करता वह गुरु नहीं बल्कि पाखण्डी है। उसने अपने स्वार्थ के लिए गुरुआई की है। यह सच्चाई है। पीछें से गुरु का एहसान रह जाता है :—

कामी तरे, क्रोधी तरे, पापी तरे अनन्त,
आन उपासक कृतघ्न तरे न नाम व रटन्त।

कबीर साहिब कहते हैं कि सब की मुक्ति हो सकती है मगर जो दूसरे की पूजा करता है और नाशुकरा (कृतघ्न) है उसकी मुक्ति नहीं। तुम्हारे माता-पिता ने तुम्हारे साथ एहसान किया अगर तुम इसके बदले उनको हानि पहुंचाते हो व कृतघ्न होते हो तो तुम पतित हो। वह कहते हैं कि सबका सबसे न्यारा है। यह कैसे है ? वह जो वस्तु अपने अन्तर में प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती हैं वह शरीर में भी आती है तथा उससे न्यारी भी हो जाती हैं। शरीर में आती हैं तो शरीर को Feel करती है, मन में आती है तो मन की साक्षी बन जाती है, प्रकाश में जाती हैं तो प्रकाश को देखती

है तथा फिर अलग भी हो जाती है। इस प्रकार वह सब में भी है और सब से न्यारा भी है। फिर वह गुरु कौन है ? ऐ भूले हुए मानव ! वह तेरी अपनी ही ज़ात है, तेरा अपना ही आप है। वह दुनिया में एक है। वह एक शक्ति है, जो प्रत्येक मानव के अन्तर मौजूद है मगर इसकी समझ शीघ्र नहीं आती। शब्द और प्रकाश आधार हैं। मगर वह वस्तु जो प्रकाश में रहती तथा प्रकाश व शब्द को देखती और सुनती है उसका तो कोई आकार नहीं, कोई रूप नहीं। अत: फिर गुरु कौन हुआ ? गुरु वह वस्तु है जो निराकार है। वही हम सब का आदि है, वह तत्त्व है। जो वास्तविक मालिक है तथा जिसे मालिकेकुल कहते हैं वह जो तत्त्व है वह कुछ करता नहीं है क्योंकि वह कुछ नहीं करता अत: वह केवल साक्षी है अर्थात् Witness करता है। करने वाला शब्द है, प्रकाश है, मन है तथा शरीर है। हम सब उसके अंश हैं। यहां आये, शरीर तथा मन के चक्कर में फंस गये तथा अपने आप को भूल गये।

राधास्वामी चरण क्या हैं ? बाहरी गुरु के

चरण को धो-धो कर पीते हुए सारी दुनिया मर गई, इससे पूर्ण लाभ नहीं होता। गुरु के सत्संग में जा कर गुरु की बात को समझो। किसी महापुरुष के सत्संग में बैठकर के उसको अपने कष्ट बताओ। उस की सोबत (संगति) में रहो। अगर वह स्वयं निर्बन्ध है तो दु:ख-सुख तो आते जाते रहते हैं, तुमको अवश्य शान्ति मिलनी चाहिए। तुम्हारे सम्पूर्ण प्रश्न समाप्त होने चाहिएं; मैं एक बड़ी जिम्मेदारी को अनुभव करता हूं। मेरे पास शुभ भावनाएं हैं या मैंने जीवन में जो कुछ अनुभव किया वह बता देता हूं। दाता से प्रार्थना हैं कि मेरी इज्ज़त अब तेरे हाथ है। यह लोग जो आते हैं इनके दु:खों को दूर कर दे।

पृथ्वी नाथ जी का साथ मैंने इसलिए दिया कि यह सच्चे आदमी हैं। मैं इन्हें कहता हूं कि स्वयं क्रियात्मक बनें। चाहे वह उसको मानें या न मानें इनको स्वयं लाभ पहुंचेगा। जो सत्त पुरुष है उससे सत्यता ही निकलेगी। प्रत्येक स्थान पर सत्यता ही फैलेगी। इसीलिए कहा जाता है :—

होइ है भूमि पवित्र जहां सन्त पग धरहीं ।

इसलिए रिवाज़ है कि साधु या सन्त से प्रसाद खाते हैं तथा उनके चरणों को हाथ लगाते हैं । जो उनसे प्रेम करेंगे तथा उनके पास आयेंगे उनको लाभ पहुंचना चाहिए । उनका जीवन बदल जायेगा । प्रकृति का नियम (Law of nature) काम करता है । यह प्रकृति का नियम (Law of nature) है ।

—o:o—

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

सत्संग हजूर परम दयाल फ़कीर चन्द जी महाराज, श्रीनगर कश्मीर का सत्संग

तिथि : 13-5-81

ज़माने का भी एक चक्कर होता है जिसे काल चक्कर कहते हैं। हमारे अन्तर जो एक वासना फूटती है, इच्छा और आशा पैदा होती है, वह ब्रह्म है। उस आशा में हम लुप्त हो जाते हैं तथा क्रीड़ा करते हैं, यह विष्णु है। फिर वह नष्ट हो जाती है यह कार्य शिव का है। कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो सदैव स्थिर रहे। यह त्रिलोकी कहलाती है। त्रिलोकी या इस संसार में अगर कोई यह चाहे कि मैं सदैव एक ही अवस्था में रहूं, रह नहीं सकता। क्योंकि इच्छा आयेगी वह खेल खेलेगी तथा फिर

समाप्त हो जायेगी। कोई इच्छा या वासना जो भी तुम करो एकरस जीवन कभी भी किसी का नहीं रह सकता। तो सन्त मार्ग कहता है कि ब्रह्मा, विष्णु, शिव यह तीनों ही एक चक्कर में फिर रहे हैं, जिसे काल चक्कर कहते हैं। आज दाता दयाल का एक शब्द सुनाता हूं, जो कि मेरे नाम है। मैं दुःखी व अशान्त होकर के उनके चरणों में गया था। उन्होंने मेरे अज्ञान को मिटाने और मुझे समझाने के लिए यह शब्द लिखा था :—

काल चक्र का सहज हिण्डोला, झूला अचरज न्यारा,
सब कोई झूलें झूला चढ़कर, काल झुलावन हारा

आप शायद काल को न समझ सकें। मैं आपको वैज्ञानिक ढंग से समझाता हूं। बैटरी होती है उसमें तीन वस्तुएं होती हैं, एक इलैक्ट्रिक मोटिव फोर्स (EMF), एक करण्ट, ऐक रजिस्टैन्स होती हैं। इलैक्ट्रिक मोटिव फोर्स का पैमाना वोल्टेज़ है। करण्ट का पैमाना एम्पेयर है और रजिस्टैन्स के लिए है आर। वह एक तत्त्व जो संसार का आधार है, जिसे मालिकेकुल कहते हैं और वह एक शक्ति Energy

का भण्डार है । जैसे, जहाँ से विद्युत् निकलती है वह विद्युत् का भण्डार है, उसमें से करण्ट निकलती है कोई किसी तरफ जाती है, कोई किसी तरफ जाती है । वह जो करण्ट निकलती है उसका नाम है काल वह रचना करता है और वह हमेशा गति में रहता है । करण्ट सदैव गति में रहती है कि नहीं रहती ? विद्युत् करण्ट सदैव गति में रहती है । वह जो करण्ट है उसे सन्त काल, कहते हैं । काल समय को भी कहते हैं । समय भी परिवर्तनशील है । दाता फरमाते हैं कि वह चक्कर सदैव चक्कर में चलता रहता है । कभी युवावस्था है, कभी बुढ़ापा है; कभी बचपन है । इसको वह कहते हैं कि ये सब झूल रहे हैं :—

चन्द्र, सूर दोऊ गगन में झूले, झूलें नौ लख तारे ।

चांद चलता है, सूर्य चलता है और सितारे चल रहे हैं कि नहीं चल रहे ? वह कहते हैं कि यह एक चक्कर चल रहा है :—

जीव-जन्तु पृथ्वी में झूलें नर पशु सकल विचारे,
राजा झूला, रानी झूली और प्रजा समुदाई,
ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर झूलें, झूली सब दुनियाई ।

वह बून्द रूपी करण्ट जो सत्तलोक से आई है वही काल है। उसमें सृष्टि की प्रत्येक वस्तु गति कर रही है और जिस प्रकार आदमी झूला झूलता है इस प्रकार सृष्टि झूल रही है।

लक्ष्मी झूली, दुर्गा झूली गायत्री महारानीं,
देवा झूले देवी झूली, जल, थल, अग्नी पानी।"

अर्थात् प्रत्येक वस्तु चक्कर में है। सब :—

काल भी झूला अपना झूला, सृष्टि प्रलय कर प्यारे,
वह भी बचा न चक्र से अपने, झूला झूले सारे।

वह वस्तु करण्ट वहां से निकली है, काल की उसने सृष्टि पैदा की। फिर क्या हुआ ? प्रलय आ गई। उत्पत्ति होती है फिर प्रलय आ जाती है। इस प्रकार वह जो करण्ट है वह भी झूलती रहती है और झूल कर समाप्त हो जाती है।

चढ़ी पेंग तब ऊंचे आये, उतरी नीचे ठहरे,
कभी मिले तो जमघट देखी, विछुड़ के हो गये न्यारे।

कभी हम अपने मन के भीतर प्रसन्न हो जाते हैं और कभी ऐसे गिरते हैं जिसका कोई हिसाब नहीं।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

दुनिया बनती और बिगड़ती रहती है । अब देखो, आप लोग बैठे हुए हो, घण्टे के पश्चात् आप कहीं चले जायेंगे तथा हम कहीं चले जायेंगे । ऐसे ही हम जीवन प्राप्त करते हैं । कोई पिता बनता है, कोई बेटा बनता है, कोई भाई बनता है जिससे परिवार बन जाता है । समय आने पर सभी अपनी मृत्यु को चले जाते हैं ।

एक दशा में नित जो वरते, कोई नज़र न आया,
पीर,पैग़म्वर कुतुव,औलिया,ऋषि,मुनि वचन न पाया ।

वह कहते हैं कि चाहे कोई सन्त हो, परमसन्त हो किसी भी अवस्था में उसका जीवन एकरस नहीं रहता अपितु यह बदलता रहता है ।

पानी भया भाप की सूरत, धाया गिरि कैलाशा,
बरफ बना धारा वह निकली, नीचे किया निवासा ।

सूर्य पानी को खींचता है जिससे भाप बनती है तथा बादल बन जाता है और वर्फ बन जाती है तथा फिर पानी बनकर समुद्र में चला जाता है ।

नीचे भी रहने नहीं पाया, फिर ऊंचे की आशा,
हम तो देखें खुली दृष्टि से, अचरज अजब तमाशा।

नारायणदास मेरे साथ आया हुआ है। आज प्रात: तार आई कि उसके लड़के का स्कूटर पर Accident हो गया। आज मैं एक स्थान पर गया उसकी पत्नी चार वर्ष से बीमार पड़ी है। परिवर्तन आते रहते हैं। जीवन में कोई किसी बात का दावा नहीं कर सकता कि सदैव एक अवस्था रहेगी।

लकड़ी जल कर कोयला हो गई, कोयला राख और माटी,
माटी, माटी में नहीं ठहरी, बनी काठ और लाठी।

लकड़ी जल जाती है, राख हो जाती है उसमें वृक्ष पैदा होते हैं।

विष्ठा अन्न, अन्न भया विष्ठा, सोई सब कोई खावे,
यह प्रपंच है अद्‌भुत न्यारा, कोई विरला लख पावे।

हम अनाज खाते हैं, टट्टी फिरते हैं। गाय घास खाती है, गोबर हो जाता है उसकी खाद बनती है। उसी खाद का प्रभाव फिर हमारी सब्जियों में आता

है। दाता फरमाते हैं कि यह संसार एक विचित्र लीला है:—

जाग्रत स्वप्न सुषुप्ती लीला, कभी ऐसी कभी बैसी,
यह सब काल बली की माया, कभी जैसी कभी तैसी।

वह कहते हैं कि स्पष्ट देखता हूं कि यह क्या है? काल का अर्थ अब समझ गये होंगे। करण्ट ऊपर से Energy हमारे अन्तर जो हमारा अपना आप है। जो हम हैं वह कूटस्थ है। वह प्रकाश और शब्द का भण्डार है। उसमें से एक ख्याल निकलता है जिसे मन कहते हैं। उस मन में से कितनी धाराएं निकलती हैं। कभी कुछ सोचते हैं, कभी कुछ सोचते हैं। हमारा जो अपना आप है सत्त जो हम हैं और जो हमारा वास्तविक रूप है वह कूटस्थ है। उसमें से ख्याल निकलते हैं। तुम्हारे एक मन में से बहुत ख्याल निकलते हैं।

पण्डित कभी अनाड़ी होते, कभी अज्ञानी ज्ञानी।
कभी जड़ मिल-जुल चेतन ठहरे, कभी चेतन जड़ जानी।

बुद्धिमान् कभी ऐसी ग़लती खा जाता है जिसका कोई हिसाब नहीं और किसी समय एक मूर्ख ऐसा कार्य

कर जाता है जो अच्छे से अच्छा होता है। कभी चेतन, जड़ हो जाता है, कभी जड़, चेतन हो जाता है।

समझत वने कथन नहीं आवे, मन वाणी अलसानी,
कैसे कोई समझावे किसको, समझे कोई गुरु ज्ञानी।

वह कहते हैं कि इस बात को समझने में व्यक्ति की बुद्धि चक्कर खाती है इसको समझ करके बयान नहीं किया जा सकता। इस बात को कोई, किस को, कैसे समझाये। किसी की समझ में नहीं आता। इसको वह समझ सकता है जिसको गुरु ज्ञान मिल जाये।

एक दशा में कोई न वरते, कभी बैठा, कभी दौड़ा।
कभी थका,कभी सोया, लेटा, काल चक्र अति चौड़ा।

कोई भी व्यक्ति एकरस नहीं रहता जैसे कभी हम बैठते हैं, कभी सोते हैं, कभी जागते हैं।

झूले की है विचित्र कहानी, कथा वारता न्यारी।
नर को हम समझावन आये, सुने न वात हमारी।

यह जो संसार का खेल है यह विचित्र कहानी है। इसकी कथा भी बहुत बिचित्र है। देखो, यह पन्थ वाले योगी और भक्त क्या कर रहे हैं ? सच्चाई को कोई ग्रहण नहीं करता :—

दु:ख-सुख दु:ख-सुख द्वन्द्व पसारा, द्वन्द्व से प्यार बढ़ाया।
द्वन्द्व भाव ले जगत् रचाना, द्वन्द्व के फांस फंसाया।

द्वन्द्व दोपने को कहते हैं। एक व्यक्ति मुझे प्यार करता है यदि मेरा पत्र नहीं आता या जब मैं बीमार होता हूं तो वह रोता है। अत: दु:ख क्यों होता है ? क्योंकि हम अपने से अलग किसी वस्तु से प्यार करते हैं। हम दोपने में आते हैं :—

मन, बुद्धि और चित्त, हंकारा सो झूले की रसरी,
दो लड़, त्रयलड़, चौलड़ बन आई, जीव निबल को जकड़ी।

यह झूला कौन झुलाता है ? हमारे अन्दर मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार हैं। ये चार वस्तुएं हमें सदैव तरह-तरह के नाच नचाती रहती हैं। हम जितने जीव हैं सब इस मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार के चक्कर में फंसे हुए हैं।

कभी खुश होते हैं, कभी अहंकार करते हैं। कभी यह करते हैं, कभी वह करते हैं :—

जकड़े माया के फन्दे में, रोये और चिल्लाये।
शोर मचाये वहु चिल्लाये छूटन विधि न पाये।

यह शब्द मेरे नाम लिखा हुआ है। मैं रोता था न! जब मैं दाता के दरवार में जाता तब रोता, वहाँ से जब आता तब रोता। मार ज़मीन आसमान के कलावे मिलाया करता था। आरती करता। कभी यह करता, कभी वह करता :—

तव दयाल को दाया लागी, सन्त रूप धर आया।
राधास्वामी अचल मुकामी, शालिग्राम कहाया।

सन्त क्यों आते हैं? किनके लिए आते हैं? सन्त उनके लिए आते हैं जो इस मन के चक्कर में आकर हाय-हाय करते हैं तथा भागते फिरते हैं। दाता दयाल के गुरु राय सालिगराम साहिब जी हैं। तब ऐसी अवस्था को देखकर वह जो करण्ट कूटस्थ था, जो सत्त (Existance) था, जिसमें से करण्ट निकली है

वह मानव रूप में क्यों आया ? कि वह जो दु:खी जीव हैं, जो हाय-हाय करते फिरते हैं और कहते हैं कि हाय, यह नहीं हुआ, यह नहीं हुआ, वह मर गया। इनको समझाने के लिए कि तुम क्यों दु:खी होते हो :—

नर शरीर में प्रगटा आकर, जीवन बहुत चिताया।
जो कोई जीव शरन में आया, अपना कर अपनाया।

उसने शरीर में आकर सन्त का अवतार धारण कर जीवों को चिताया। क्या चिताया ? कि ऐ फ़कीर ! जिस संसार में तू रोता है यह तो चक्कर ही ऐसा है जो सदैव चलता रहता है। यहां कोई भी सुखी नहीं है। दु:ख-सुख आते रहते हैं, नेकी-बदी बनती रहती हैं, पाप-पुण्य होते रहते हैं, बुढ़ापा-जवानी आती रहती हैं। जो उस दाता की शरण में चला गया उसको वह हृदय से लगा लेते हैं और उसे अपना लेते हैं।

सुन फ़कीर यह गुरु उपदेश, मैं भी तुझे सुनाऊं।
बात जो मेरी मन से माने, इस झूले से बचाऊं।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

वह मुझे कहते हैं कि फ़कीर चन्द ! गुरु का उपदेश सुनो। मैं भी तुम्हें सुनाता हूं। गुरु के दरबार में जाकर जो गुरु कहता है उसको ध्यान-पूर्वक सुनो; उसकी बात को समझो तब उसका कल्याण होता है और वह इस झूले से बचता है।

खेल खेलाऊँ सुगम सुहेला, सुरत शब्द मत गाऊँ।
काल हिण्डोले से तू बाचे, विधि विचित्र समझाऊँ।

वह मुझे कहते हैं कि मैं तुम को खेल खिलाता हूं और सुरत, शब्द का मार्ग बताता हूं ताकि तुम इस काल चक्कर से बच जाओ। मैं तुम्हें एक बात बताता हूं। वह बात क्या थी ? :—

कर सत्संग विवेक से गुरु का, गुरु दयाल हितकारी।
साधु वन कर साध ले जुगती, जा झूले के पारी।

वह कहते हैं कि गुरु का संग सोच-समझ कर करो। यह सोच-समझ ही मुझे नहीं आती थी। मैं गुरु आदि कुछ नहीं। केवल इस सोच-समझ को मुझे देने के लिए मुझे यह काम दिया गया था ताकि मैं इस काल चक्कर को समझ जाऊं। मैं इस काल

चक्कर के रूप को कैसे समझा और इस झूले से पार कैसे गया ? केवल मन और माया के रूप की समझ आने ने मेरे जीवन का तख़्ता पलट दिया। इस काल और माया के चक्कर के रूप की समझ को कोई लेना नहीं चाहता। इस सच्चाई के समझने के लिए कौन आता है ?

नर शरीर सुर दुर्लभ पाया, सत्संगत में आया,
तेरा दांव पड़ा है पूरा, सोच समझ तज माया।

यह माया मुझ से तजी नहीं जाती थी । अब मुझें माया के रूप का पता चला। यह हमारी बुद्धि, हमारे विचार, हमारी इच्छा और हमारे मन की फुरना, माया है। यही माया जब प्रबल तथा घनी हो जाती है तो वह छाया हो जाती है और रूप प्रकट हो जाता है, शक्ल बन जाती है। अब तो निर्बलता आ गई है न ! पहले समय में मैथुनी सृष्टि नहीं होती थी। इस समय तो स्त्री-पुरुष मिलते हैं तब बच्चा पैदा होता है। प्रारम्भ में विचार की सृष्टि होती थी । मैं कई बार सोचा करता हूं कि सब से पहले मानव कैसे पैदा हुआ। उस

शक्ति रूपी ईश्वर ने संकल्प किया उसके संकल्प से आदमी बन गया। क्योंकि आदमी को समाज में कोई बात-चीत करने वाला नहीं था उसने संकल्प किया और उसके ख्याल ने स्त्री को पैदा कर दिया। अब तो मुझे इसका विश्वास होना चाहिए, क्योंकि मेरे अनुभव में यह आया है कि लड़ाई के मोर्चे में दाता दयाल प्रकट हुए। मेरे ख्याल ने उन्हें पैदा कर लिया और उस मुसीबत के समय में मैंने उनसे सहायता ले ली। सत्संगी भी अपने संकल्प से मुझे बना लेते हैं और मेरे रूप से जाग्रत में काम ले लेते हैं। आदमी के मन के अन्तर जिस प्रकार का विश्वास, श्रद्धा और उसके जैसे संस्कार होते हैं यही उसके अन्दर रूप बनाकर आते हैं। कोई राम, कोई कृष्ण; कोई मुहम्मद, कोई देवता या कोई देवी बाहर से नहीं आता। खेद ! इसी बात की अज्ञानता ने भिन्न-२ पन्थों को पैदा कर दिया है और मानव वंश को बांट दिया हुआ है :—

अब की चूक मौज न ऐसी, त्याग काल की आसा।
आज का साधन आज ही कर ले, कल को होगा उदासा॥

वह मुझे कहते हैं कि तुम ने नर शरीर
है और सत्संगति में आया है अत: अब तू गलती
नहीं खायेगा। ऐसी मौज़ नहीं है। काल की आशा
छोड़ दो। काल की आशा छोड़नी क्या हुई ? मेरे
मन के भीतर जितनी वासनाएं व फुरनाएं पैदा
होती हैं मैं उनके पीछे नहीं दौड़ता। क्या करता
हूं ? जो हो रहा है ठीक हो रहा है। राजी बै रज़ा
रहता हूं। जो मौज़ करती है ठीक करती है।
जितनी बुद्धि है उसके अनुसार काम करता हूं।
अपनी आशाओं में फंसता नहीं।

यही फ़कीरों का धर्म है। अत: काल क्या
हुआ ? वह जो करण्ट मेरे अन्तर आती है, मन
संकल्प करता है, इच्छा पैदा होती है, वासनाओं
के पीछे नहीं बहता। आशाओं के बिना तो मेरा
भी निर्वाह नहीं है। इच्छा करता हूं। मगर यदि
कोई काम पूरा नहीं होता तो उसकी परवाह नहीं
करता। मालिक तेरी मौज़ बस, यही राज़
(भेद) है।

दाता मुझे साधन करने को कहते हैं। दुनिया

मन के चक्कर में साधन करती है। मगर वास्तविक साधन क्या है ? मन के ख्यालात या मन, चित्त, बुद्धि, अहंकार को छोड़कर, दूसरे शब्दों में दस द्वार पार कर आगे केवल प्रकाश और शब्द का इष्ट रखना, यही साधन है :—

वार-वार नहिं अवसर प्राणी, काल महां दुःखदाई,
जो कोई करे काल की आसा, सो पाछे पछताई ।।
राधास्वामी दया के सागर, तेरे कारण आये,
सीस चरन में उनके झुका कर, अपना काज बनाये ।।
राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी गाना,
मन, वचन, कर्म से भक्ति कमाना, झूले वाहर आना ।

सुरत को अपने अन्दर जो स्वतः शब्द है उसके साथ लगाने का नाम राधास्वामी का गाना है। मुख से राधास्वामी-२ करने से तुम्हारा बेड़ा पार नहीं होगा । मगर हमारा मन बहुत चंचल है, अन्दर ठहरता नहीं । तो भवसागर या काल के चक्कर से पार होने का क्या उपाय है? जिसको यह ज्ञान हो जाये कि जो कुछ मेरे मन के अन्दर फुरना फुरती है यह काल का चक्कर है। फिर अपनी सुरत को अपने इष्ट से लगाओ, काल

चक्कर में रहो मगर उस चक्कर में फंसो नहीं। अपना इष्ट काल चक्कर से परे प्रकाश और शब्द रखो। अपने अन्दर प्रेम का जज़्बा पैदा करो और अपने अन्दर में ही आरती किया करो। मन को वश में करने के लिए पहले बाहर में कुर्बानी की आदत डालो और निष्काम कर्म करो, ताकि जब तुम अन्तर में बैठो तो जो ख्यालात तुम्हारे अन्दर आयें तुम उनको काट सको। जब ख्यालात कट जायेंगे, अपने इष्ट की मूर्ति बना लो, मन स्थिर हो जायेगा। फिर प्रकाश आ जायेगा, फिर शब्द आ जायेगा। और इस प्रकार शरीर, मन और आत्मा से तुम्हारी गांठें खुलती जायेंगी। बस यही भेद है जो मैंने आप को बता दिया।

अगर मेरे इन विचारों में सत्यता है तो जो इनको सुनेगा उसके मन में परिवर्तन आना चाहिए। मगर अगर ऐसा नहीं है अर्थात् मेरी संगति से उसको शान्ति नहीं मिलती, आपकी शंकाएं नहीं जातीं तो इसमें मेरा दोष है, आपका नहीं। मन या काल के चक्कर से परे जो तुम्हारा निज स्वरूप है

वह अविनाशी है । मानव अविनाशी तो पहले ही है मगर उसको भ्रम है, यह असली बात है ।

नोट:—इस विषय में आरती शब्द आया है। असली आरती है अकेले बैठ कर, ज्योति को प्रकट करके, अपने आपको ज्योति में समा देना। आरती शब्द 'आरत' से निकला है। अपने आप को दीन और आधीन बनाकर उससे प्रेम करना, सच्ची आरती है।

शोक समाचार

परम सन्त गुर दयाल सिंह जी छूछक (ज़ीरा, ज़िला फिरोज़पुर) वाले का देहान्त दिनांक 15-7-81 बुधवार को दुर्घटनाग्रस्त होकर हुआ।

यह हजूर परम दयाल जी महाराज के परम भक्त थे। इनको सत्संग और नाम दान देने का काम वख़्शा हुआ था, मानवता मन्दिर परिवार को उन के अकस्मात् चोला छोड़ने पर शोक है।

Secretary
Manavta Mandir, Hoshiarpur

पत्र व्यवहार द्वारा ज्ञान

प्यारे भाई,

राधास्वामी !

तुमने पूछा है कि सार शब्द क्या है, ? इससे किसकी समानता (बराबरी) है, तथा यह कैसे प्राप्त होगा ?

सुनो ! माया देश, काल देश और दयाल देश तीन दर्जे हैं। खट चक्कर माया देश में है। सहस्रादल कमल से भंवर गुफा तक काल देश है। सत्तलोक से अनामीधाम तक दयाल देश है।

अन्तिम शब्द, सार शब्द की मुशावत (तुलना) कोई नहीं। मैं अपना अनुभव बताता हूं कि कभी न टूटने वाला, एक ही लय वाला एक शब्द होता है। जो शरीर को भूले, मन के सम्पूर्ण ख्यालात को भूले, जिसको कोई शक्लें न बनें वही व्यक्ति इसे सुन सकता है। दूसरे शब्दों में हमारा जो अपना आप है जिसे सन्त सुरत कहते हैं उसका अपने आप में ठहर जाने से जो उसकी चेतनता होती है, मैं उसे सार शब्द या निज नाम समझता हूं। यह मेरा अनुभव है। मैं दावा नहीं करता कि जो कुछ मैं कहता हूं यही ठीक है। मैं अपनी

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

बाबत कह सकता हूं। मुझे यह कैसे प्राप्त हुआ। मैं मुतलाशी (खोजी) था । जब से मुझे यह पता लगा कि मेरा रूप नूरानी (रोशन हो) लोगों के अन्तर प्रकट होता है मगर मैं नहीं होता तो फिर मैं शरीर को, मन को तथा गुरु के रूप को, बाहरले गुरु के प्रेम को भूल जाता हूं। उस समय (प्रति दिन नहीं) कभी-२ इस सार शब्द को सुनता हूं या सार शब्द में रहता हूं। यह सार शब्द मेरी अपनी सुरत की चेतनता के कारण होता है। तथा जब सुरत, निरत हो जाती है तो जो सार शब्द है यह भी समाप्त हो जाता है। फिर हमारा आद घर जहाँ हमने जाना है, वह क्या है ? स्वामी जी जेठ महीने में कहते हैं :—

वहां न सत्त नाम, न नाम, न अनामी,

यह मंजिल प्रत्येक व्यक्ति के भाग में नहीं आती। मन चौदह लोक में रहता है। कुर्बानी करनी पड़ती है। शरीर को भूलो, मन को भूलो, प्रकाश को छोड़ो तब यह सार शब्द आता है जो प्रत्येक व्यक्ति का आदि है। हम सब इसी अवस्था से आये हैं। मैंने क्या समझा कि मैं कौन हूं।

लब खुले और बन्द हुए यह राज़े ज़िन्दगानी है।

कर्म भोग

मेरे साहित्य को पढ़ने वालो ! कुछ कहना चाहता हूं। मैंने जीवन भर किसी चीज़ की तलाश के प्रभावाधीन बड़ी सच्चाई से काम किया। प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा। दाता दयाल जी महाराज का आदेश था कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। आज 43 साल से मैं यह काम कर रहा हूं। मुझे यह दावा नहीं कि जो कुछ मैंने समझा व अनुभव किया है यह सब लोगों को लाभ पहुंचा सकता है। मेरी अपनी कुरीद अर्थात् हार्दिक खोज को समाप्त करने के लिए मैं अपने लिए इस अनुभव को सत्य मानता हूं।

अब मैं बूढ़ा हो गया। मौज अथवा मेरे कर्मों के कारण मैं इस मानवता मन्दिर बनाने के सिलसिले में फंस गया। केवल एक खुशी है कि इस फंसाव में मैंने निज स्वार्थ अर्थात् धन, मान,

प्रतिष्ठा आदि नहीं रखा।

मन्दिर में तीन हस्पताल हैं, शिशु स्कूल, प्रैस, लायेब्रेरी और फ्री लंगर है। खर्चे बहुत बढ़ गये हैं। लगभग 4500 रुपये हर महीने कर्मचारियों को वेतन दिया जाता है। 70000 रुपये की दवाइयां हस्पताल में दी गई हैं। शिशु स्कूल में बच्चों से कोई फीस नहीं ली जाती। आगे सेहत अच्छी थी तो बाहर का दौरा करता था। कुछ तो सच्चाई बयान करने का अपना कर्त्तव्य पूरा करता था और कुछ मन्दिर के लिए रुपया जो कोई खुशी से देता, ले आता था। अब शरीर अधिक काम नहीं कर सकता। यदि मेरा साहित्य पढ़ने वाले समझते हैं कि मेरा काम प्रायः सब अधिकारी जनता के लिए लाभदायक है, तो जो इच्छा हो मन्दिर की सेवा करें।

तमाम साहित्य जो मन्दिर से प्रकाशित होता है, डाक खर्च सहित मुफ्त जाता है। मन्दिर पुस्तकों की सूची प्रकाशित कर देता है जो चाहें मुफ्त मंगवा कर पढ़ सकते हैं। मेरी हार्दिक प्रार्थना है कि जो सज्जन मेरे विचारों से सहमत हैं वे अपना

जीवन क्रियात्मक बनायें । पुस्तकें या सत्संग केवल मन के भ्रम, शंकाएं दूर कर सकते हैं । यदि अमल शान्ति नहीं है तो यह पढ़ना लिखना भी एक प्रकार की खुशी देगा, अमली शान्ति नहीं मिलेगी । अधिक क्या लिखूं चले-चलाओ का समय है, मैंने वसीयत (Will) कर दी है कि मेरे बाद शर्मा दयाल जिन का पूरा नाम डाक्टर ईश्वर चन्द्र शर्मा है (जो अमेरिका में हैं) और मुन्शीराम भगत, मानवता और आध्यात्मिकता का प्रचार करेंगे । मन्दिर का सारा काम ट्रस्ट वालों के आधीन है । ट्रस्ट वालों को कह चला हूं कि अगर किसी समय आर्थिक सहायता न मिलने के कारण काम न चल सके तो हस्पताल आदि बन्द कर दें, केवल प्रकाशन का काम जारी रखें । अगर यह भी न चल सके तो दाता दयाल जी महाराज का (Statue) धरती में गाढ़ दें और मन्दिर की सारी सम्पत्ति सरकार या किसी और संस्था को दे दें ।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

ਪੰਜਾਬੀ ਕਤਾਬਾਂ ਦੀ ਸੂਚੀ

1, ਪੰਜ ਨਾਮ ਦੀ ਵਿਗਿਆਨਕ ਵਿਆਖਿਆ । 2. ਅਨੁਭਵ ਦਾ ਨਿਚੋੜ ਮਾਨਵਤਾ । 3. ਸਚਾਈ ਦਾ ਨਿਚੋੜ । 4. ਮਾਨਵਤਾ । 5. ਮਾਨਵ ਕਲਿਆਨ । 6. ਸੱਚਾ ਧਰਮ ਮਾਨਵਤਾ । 7. ਨਾਮ ਦਾਨ ।

अंग्रेजी भाषा में साहित्य

1. A Word to Americans. 2. A Word to Canadians.
3. Manavta the true religion.
4. Religious Research. 5. Weight of Soul.
6. Truth Always Wins. 7. Essence of Truth.
8. Science of God Realization.
9. True Sanatan Dharma or True Religion of Humanity. 10. JeewanMukti.
11. Art of happy living. 12. Key to Freedom.
13. Broadcast of Reality in America.
14. Yogic Philosophy of Saints,
15. Nam Dan. 16. Autobiography of Faqir.

हिन्दी भाषा में पुस्तकें

1 अनुभवसार ।

—o⁐o—

गतांक के आगे]

जब एडगर केसी किशोरावस्था में ही थे, तो उन्हें जब सुला दिया जाता तो वह समाधि की अवस्था में चले जाते और उन्हें भूत और भविष्य की बातों का ज्ञान हो जाता था। उनकी शिक्षा केवल सातवीं कक्षा तक ही हुई थी। विना किसी डाक्टरी ज्ञान प्राप्त करने के, उन्होंने ऐसे-२ मरीज़ों की ऐसी-2 बीमारियों का उपचार किया, जिनका कि बड़े एम० डी० डाक्टर नहीं कर सके थे। आश्चर्य की बात तो यह थी कि जब कोई व्यक्ति उनके पास किसी रोगी के विषय में आ कर बताता, तो एगडर केसी की समाधि की अवस्था में रोगी का शरीर और उसके छोटे-2 भाग उनकी आखों के सामने आ जाते, यद्यपि रोगी उनसे सैकड़ों मीलों की दूरी पर ही होता था। एडगर केसी फौरन बीमारी समझ लेते और उसका सफल उपचार भी बताते। उनके रोगों को पहचानने तथा सफल उपचार करने की घटनाओं से अमेरिका के डाक्टर चकित रह गये और उनकी चकित कर देने वाली चमत्कारी घटनाओं के समाचार सन् १९१० में न्यूयार्क जैसे विख्यात राष्ट्रीय

पत्रों में छपने लगे। बड़े-बड़े मेडिकल जरनलों में भी वैज्ञानिकों तथा विख्यात डाक्टरों ने उन पर लेख लिखे। उनकी ख्याति चारों ओर फैल गई और बड़े-बड़े डाक्टर असाध्य रोगों के विषय में एडगर केसी से सलाह लेने के लिए आने लगे।

लोगों की भलाई के लिए दयालु एडगर केसी ने वर्जीनिया बीच नामक अति सुन्दर नगर में समुद्र के किनारे एक संस्था स्थापित की जिसमें उन्होंने एक हस्पताल स्थापित किया। इसी ही संस्था का नाम बाद में चल कर ए० आर० ई० हो गया; जिसका उद्देश्य ईश्वर सम्बन्धी सत्य, पुनर्जन्म, जन्म और कर्म सिद्धान्त पर खोज करना और लोगों को योग साधना सिखाना है। एडगर केसी ने 'हरि ओ३म्' नाम पर ध्यान लगाने की सलाह दी।

इस संस्था के इतिहास में सन् 1923 के आस-पास एक ऐसी घटना घटी, जिसके कारण पश्चिमीय जगत् में एक नई चेतना की लहर ज़ोरों से चल पड़ी। यह लहर थी पुनर्जन्म में तथा कर्म सिद्धान्त में

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

विश्वास और समाधि, ध्यान आदि में रुचि, जिसका आज तक भी प्रचार चल रहा है। इस संस्था के सदस्य सारे संसार में फैले हुए हैं, योरुप के देशों, आस्ट्रेलिया, चीन, कैनेडा तथा जापान से लोग प्रति वर्ष इस संस्था में आते हैं। गर्मी की ऋतु में बहुत से सम्मेलन भी होते हैं और विद्वानों के भाषण भी। अमेरिका के मुख्य नगरों तथा विश्व के देशों के कुछ नगरों में भी इस संस्था की शाखाएं हैं। लाखों लोग एडगर केसी के अनुयायी हैं जो अधिकतर ऊंची शिक्षा वाले डाक्टर, इञ्जीनीयर, मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक तथा व्यापारी हैं। इसी संस्था के कारण वर्जीनिया बीच लाखों लोगों के लिए मानो एक तीर्थ स्थान बना हुआ है।

इस संस्था के विख्यात होने का सबसे बड़ा कारण है पश्चिम में पुनर्जन्म तथा कर्म सिद्धान्त का प्रचार। एडगर केसी के कारण अब करोड़ों पश्चिमीय पुनर्जन्म में दृढ़ विश्वास रखते हैं। एडगर केसी को एक दिन कैसे समाधि की अवस्था में पुनर्जन्म के रहस्य

का पता चला, इस घटना का यहाँ उल्लेख करना ठीक रहेगा ।

१९२३ में एडगर केसी को अहाओ प्रान्त के एक नगर डैटन के एक प्रिण्टिंग प्रैस के मालिक श्री आर्थर लैमर्स ने बुलाया । श्री लैमर्स यह चाहते थे कि एडगर केसी समाधि की अवस्था में जा कर उसे यह बतायें कि उसकी लम्बे अरसे से चली आ रही बीमारी का क्या कारण है । एडगर केसी समाधि की अवस्था में जाने पर बोले, "तुम्हारी लम्बे अरसे से बीमारी का, कोई शारीरिक कारण नहीं है, यह तो तुम्हारे पूर्व जन्म का फल है । तुम्हारी यही पत्नी, पिछले जन्म में भी तुम्हारी ही पत्नी थी जो तुमसे बहुत घृणा करती थी । तुम इस जन्म में अपने अचेतन मन में उसी कारण अपनी पत्नी से घृणा करते हो, इससे तुम्हारा मन सदा अशान्त रहता है और मन की अशान्ति के कारण तुम सदा बीमार रहते हो । अपनी पत्नी से घृणा करना छोड़ दो, उसे प्यार करो, तुम्हारे बुरे कर्मों का अन्त हो जायेगा और बीमारी दूर हो जायेगी ।"

समाधि की अवस्था में एडगर केसी जो बोलते थे उनको ग्लैंडस डेविस नाम की सेक्रेटरी उसे अक्षरश: लिखा करती थी । जब एडगर केसी उस दिन अपनी समाधि से जगे तो सदा की भांति अपनी समाधि की अवस्था में कही हुई बातों को पढ़ा। 'पुनर्जन्म' तथा 'कर्म' जैसे शब्दों को पढ़ कर उनके मन को बहुत बड़ा धक्का लगा । वह एक कट्टर ईसाई थे । बाईबल का पाठ प्रति दिन करते थे और इतवार के स्कूल में बाईबल पढ़ाते भी थे। उन्होंने ईसाई धर्म के अतिरिक्त और किसी धर्म के बारे में कभी कुछ नहीं पढ़ा था। ये 'पुनर्जन्म' तथा 'कर्म' के शब्द उनके हृदय पर हथौड़े की भांति चोट पहुंचाने लगे। वह अपने आपको बार-बार कोसने लगे कि उन्होंने बाईबल के विरुद्ध इन शब्दों का अपनी समाधि की अवस्था में क्यों प्रयोग किया। उन्होंने भगवान् से प्रार्थना की कि वे उनकी इस शक्ति को वापिस ले लें। वह ऐसी कोई भी बात नहीं कहना तथा सुनना चाहते थे जो ईसाई धर्म पर आधारित न हो। उन्हें पूरा दिन चैन नहीं आया और रात को नींद नहीं आई और वह रात भर

बेचैनी की अवस्था मे डेटन की गलियों में घूमते रहे। कई दिन तक एडगर केसी की यही अवस्था रही, किन्तु तब उन्हें अचानक ध्यान आया कि पुरानी और नई बाईबल में कहीं भी तो यह नहीं लिखा है कि पुनर्जन्म नहीं होता। कर्म सिद्धान्त के बारे में उन्हें अचानक बाईबल के एक वाक्य की याद आई, "As you Sow, So Shall you Reap" यह कर्म सिद्धान्त नहीं तो और क्या है। इससे उनके मन को बड़ी शान्ति मिली। उन्होंने एक बार फिर बाईबल को निरीक्षण करने की दृष्टि से पढ़ा और कई स्थानों पर ईसा मसीह द्वारा पुनर्जन्म के समर्थन की बातों को बताया। उदाहरणस्वरूप ईसा मसीह के समय, एक साधु जिसका नाम जाह्न दी बैपटिस्ट था, सब लोगों को ईश्वर की ओर लगाने की दीक्षा दे रहा था। दीक्षा देते समय वह कहता था कि भगवान् के एकमात्र पुत्र ने जन्म ले लिया है। बहुत से लोगों का यह विचार था कि जान दी बैपटिस्ट पिछले जन्म में ऐलाईजा नाम का पैगम्बर था। ईसा मसीह के शिष्यों ने एक बार उनसे पूछा, "लोग कहते हैं कि ऐलाईजा ही जान दी बैपटिस्ट बन कर आया है।

आप बताओ कि क्या यह बात सत्य है ?" ईसा मसीह ने कहा, "हां' ! जान दी बैपटिस्ट एलाईजा ही है जो वापिस आया है" यह पुनर्जन्म नहीं तो फिर क्या है। ऐसी एक नहीं, परन्तु अनेकों घटनाओं को बाईबल में देख कर एडगर केसी को पक्का विश्वास हो गया कि पुनर्जंम तथा कर्म सिद्धान्त का, बाईबल या ईसाई धर्म से कोई विरोध नहीं है। आगे चल कर तो उन्होंने यहां तक भी कहा कि ईसा मसीह युवावस्था में भारत गये थे, वहां उन्होंने योग साधना इत्यादि सीखा था। एडगर केसी ने अपनी समाधि की अवस्था में हज़ारों लोगों को उनके पिछले जन्मों की बातें बताईं। कुछ लोगों के पिछले जन्मों को बताते समय उन्होंने उनके जन्म स्थान, जन्म तथा मृत्यु की तिथियां तक भी बता दीं, जिनकी जांच करने पर वे सत्य सिद्ध हुईं। उन्होंने अपने जीवन काल में हज़ारों रोगियों की बीमारियाँ पहचानीं और उनका सफल उपचार बताया। उनकी समाधि की अवस्था में बोले गये एक-२ वाक्य को सेक्रेटरी ने लिख लिया था। ये हज़ारों पृष्ठ मुद्रित अथवा प्रकाशित सैंकड़ों फाईलों में तथा पुस्तकों के रूप में

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

आज भी इस संस्था में सुरक्षित हैं। इन पर लगातार खोज हो रही है। बड़े-2 डाक्टर, मानसिक चिकित्सा के डाक्टर, मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक, तथा विद्वान् इनसे लाभ उठा रहे हैं। एडगर केसी पर दर्जनों बैस्ट सैलरज़ छप चुकी हैं, जिनकी लाखों प्रतियां प्रत्येक वर्ष बिकती हैं।

इस संस्था में मेरे बुलाये जाने का कारण यह था क्योंकि श्री ह्यूलिन केसी को कहीं से यह पता चला कि मैं वर्जीनिया बीच से 200 मील की दूरी पर लिञ्चवर्ग नाम के एक नगर के कालेज में भारतीय दर्शन पढ़ा रहा हूं। सम्भवतया उन्होंने मेरी पुस्तक 'Ethical Philosophies of India' भी देखी थी, इसलिए उनकी मेरे में रुचि हो गई। उन्होंने मेरे से टेलीफ़ोन पर बातचीत की और तत्काल वर्जीनिया बीच में आने को कहा। वहाँ पर पहुंचने पर ह्यूलिन ने मेरा सम्मान किया। पुनर्जन्म तथा कर्म सिद्धान्त पर मेरे भाषण सब लोगों को इतने पसन्द आये कि मुझे बार-2 वहां बुलाया जाने लगा। मैं अपने भाषणों में सदा फ़कीर बाबा के

विषय में ही बोलता था। १९६९ के आरम्भ में ह्यूलिन केसी ने अमेरिका के चालीस चुने हुए डाक्टरों, प्रोफेसरों, मनोवैज्ञानिकों, दूसरे धर्मों में रुचि लेने वाले लोगों तथा कई उद्योगपतियों के साथ विश्व यात्रा का एक आयोजन बनाया। यात्रा में जाने से पहले ह्यूलिन केसी ने मुझसे पूछा, "क्या हम भारत जाने पर किसी तरह फ़कीर बाबा को मिल सकते हैं। ?" क्योंकि फ़कीर बाबा का अति प्यार भरा, प्रेरणा देने वाला पत्र मुझे कुछ ही महीने पहले मिल चुका था, इसलिए मुझे ऐसे लगा कि ये सब घटनाएं उनकी ही कृपा के कारण घट रही हैं और उनके द्वारा की गई भविष्यवाणी सच्ची होने जा रही है और वास्तव में हुआ भी ऐसा ही।

संक्षेप में, मैंने फ़कीर बाबा को एक पत्र लिखा, जिसमें ह्यूलिन तथा उनके दल की विश्व की यात्रा के सम्बन्ध में लिखा और यह भी लिखा कि वे लोग आपसे मिलने के बहुत इच्छुक हैं और दिल्ली में उनसे मिलना चाहते हैं। सौभाग्यवश जिन दिनों A. R. E. का दल देहली

पहुँचा, फ़कीर बाबा वसन्त के सत्संग का भारत का दौरा करके देहली पहुंचे। प्रोग्राम बहुत सुन्दर बन गया। मेडन होटल देहली में ह्यूलिन केसी तथा दल के सभी सदस्यों ने फ़कीर बाबा के दर्शन किये तथा उनके सत्संग का लाभ उठाया। बाद में फ़कीर बाबा का यह सत्संग 'A word to Americans' नामक पुस्तक में छप गया।

जब A. R. E. का दल अमेरिका पहुंचा तो ह्यूलिन केसी ने फ़कीर बाबा की बहुत प्रशंसा की और यह बताया कि दल के सभी लोग फ़कीर बाबा की सत्यपरायणता, सरलता, पवित्रता और ऊंचे विचारों से बहुत प्रभावित हुए। ह्यूलिन केसी तथा उनके कई साथियों ने मुझे कई बार कहा कि मैं फ़कीर बाबा को अमेरिका बुलाऊं। जब इस विषय पर बातचीत चल ही रही थी कि मेरी भारत की छुट्टी समाप्त हो गई और जुलाई १९७० में मुझे तीन वर्ष पश्चात् भारत लौटना पड़ा।

एक बर्ष के पश्चात् मुझे फिर एक वर्ष के लिए

अमेरिका पढ़ाने के लिए १९७१ में बुलाया गया। भारत में रहने की एक वर्ष की अवधि में मैं फ़कीर बाबा के दर्शन करने कई बार होशियारपुर तथा देहली गया और उनके सत्संगों का लाभ उठाया। अमेरिका में जाने से पहले एक बार फिर मैं फ़कीर बाबा के दर्शन करने के लिए होशियारपुर गया। इस बार उन्होंने मुझे विशेष स्नेह की दृष्टि से देखा और आशीर्वाद देते हुए बोले, "तुम्हारी इस बार की अमेरिका की यात्रा विशेष रूप से सफल रहेगी।"

जून १९७१ में मैं अपनी पत्नी के साथ अमेरिका पहुँचा। मेरे दोनों लड़के पहले से ही अमेरिका में पढ़ रहे थे। वे १९७० में हमारे साथ भारत नहीं लौटे थे। इस बार मुझे जिस कालेज में पढ़ाना था, वह वर्जीनिया बीच की A. R. E. संस्था से केवल ४५ मील की दूरी पर था। इसलिए A. R. E. में मेरे भाषण और भी अधिक होने लगे और A. R. E में ऐसे अनेक डाक्टर, मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक तथा प्रोफेसर मेरे सम्पर्क में आये, जो मेरे स्थायी मित्र बन गये।

मुझे इन अमेरिकन मित्रों पर बहुत गर्व है। जब इनके नि:स्वार्थ प्रेम तथा अपने प्रति इनकी श्रद्धा देखता हूं तो ऐसे अनुभव होता है कि वे हमारे सम्बन्धियों से भी अधिक प्रिय हैं। ए० ई० आर० संस्था के साथ-२ वर्जीनिया बीच में और भी कई अनेक ऐसी संस्थाएँ हैं जिनका उद्देश्य आध्यात्मिक उन्नति करना है। उनमें से एक संस्था योग सैण्टर भी है। मेरा सम्पर्क योग सैण्टर को चलाने वाले अति सुन्दर नवयुवक जोज़फ़ फैण्टन से हुआ जो हिन्दू धर्म, हिन्दू संस्कृति तथा योग साधना में बहुत रुचि ही नहीं रखता था वल्कि एक साधक भी था। मुझे कई बार योग सैण्टर में भी भाषण देने के लिए बुलाया गया। वहाँ भी मैं हर समय फ़कीर बाबा की महानता के विषय में कहता। नवयुवक जोज़फ़ ने भी यही इच्छा प्रकट की कि फ़कीर बाबा को अमेरिका बुलाया जाय ताकि यहां के लोग भी उनके सत्संग का लाभ उठा सकें। अत: ए० आर० ई० तथा योग सैण्टर ने मिल कर मेरे द्वारा फ़कीर बाबा को यहां आने का निमन्त्रण भेजा, जिसके फल स्वरूप अप्रैल १९७२ में फ़कीर

बाबा का स्वर्गीय पण्डित मामचन्द के साथ अमेरिका का पहला सत्संग का दौरा सम्भव हुआ। यह दौरा बहुत ही सफल रहा। ए० आर० ई० तथा योग केन्द्र वर्जीनिया बीच में, रोनोक तथा लिन्चबर्ग वर्जीनिया के कई चर्चों में और फ़िलिडलफ़िया, वाशिंगटन तथा न्यूयार्क में कई केन्द्रों में फ़कीर बाबा के प्रभावशाली सत्संग हुए और हज़ारों लोगों ने उनसे लाभ उठाया।

उनके भाषणों और सत्संगों में आने वाली सभी जनता अमेरिकन नागरिकों की थी। फ़कीर बाबा ने अनुभव किया कि यहां के अधिकतर लोग जिज्ञासु, भले, ईश्वरनिष्ठ, स्वच्छता प्रेमी तथा अनुशासन में विश्वास रखने वाले हैं। पूरे अमेरिका में घूमते हुए जिस वस्तु ने उनको सबसे अधिक प्रभावित किया वह थी इस देश के निवासियों की स्वच्छताप्रियता तथा हर एक वस्तु का भली भांति आयोजन करना। योग सैण्टर के संचालक जोज़फ़ फैण्टन से वह विशेष कर प्रभावित हुए। कई बार उनके घर गये और उनकी पत्नी डायेन

तथा नन्हे बच्चे राम को आशीर्वाद दिया। उनके रहने का प्रबन्ध वर्जीनिया बीच के एक बहुत अच्छे होटल में ए० आर० ई० द्वारा किया गया था, परन्तु फ़कीर बाबा ने होटल में न रह कर जिज्ञासु सत्संगी के घर रहने की इच्छा प्रकट की। अत: उनके रहने का प्रबन्ध वर्जीनिया बीच के एक रिटायर्ड नेवी के कप्तान जाहन कैली तथा उनकी पत्नी बैटी कैली के घर करा दिया गया। बैटी कैली रात-दिन फ़कीर बाबा की सेवा में लगी रहती थी। उनकी श्रद्धा, जिज्ञासा तथा नि:स्वार्थ प्रेम से फ़कीर बाबा बहुत प्रभावित हुए और प्यार से उन्हें बैटी न कह कर बेटी पुकारने लगे। जीन मैकलैनन नाम की एक और महिला ने भी फ़कीर बाबा को बहुत प्रभावित किया। जीन मैकलैनन न्यूपोर्ट न्यूज़ वर्जीनिया के एक विख्यात डाक्टर श्री जेसन मैकलैनन की प्रतिभाशालिनी पत्नी थीं। उन्होंने पूरे दो सप्ताह तक अपनी बड़ी आरामदायक कार में फ़कीर बाबा, पण्डित मामचन्द और हम दोनों को घुमाया और उन्हीं के कारण ही फ़कीर बाबा के वाशिंगटन, फ़िलिडलफिया तथा न्यूयार्क के सत्संग सम्भव हो

सके। डा० मेकलैनन फ़कीर बाबा से बहुत प्रभावित हुए। फ़कीर बाबा मैंकलैनन दम्पति को आशीर्वाद देते रहे। इसके अतिरिक्त फ़कीर बाबा, न्यूजर्सी के टाम क्रास तथा उनकी पत्नी, फ़ारेस्ट वर्जीनिया के विख्यात डाक्टर बिलियम मेकेव तथा उनकी सुन्दर कलाकार विदुषी पत्नी ऐनिस मेकेव तथा डेटन के प्रसिद्ध डाक्टर हैरो फ्रोनिस्टा तथा उनकी श्रद्धालु पत्नी सिलविया से बहुत प्रभावित हुए। न्यूपोर्ट न्यूज़ की एक सुन्दर नवयुवती बैटी एटकिन्सन तथा उनके वकील पति स्टुअर्ट एटकिन्सन भी फ़कीर बाबा के सम्पर्क में आये। बैटी एटकिन्सन तो अपने भारत के दौरे में, १९७० में फ़कीर बाबा से मिल भी चुकी थी और फ़कीर बाबा ने उन्हें वहाँ एक विशेष सत्संग दिया था। लिञ्चबर्ग वर्जीनिया के एक और बड़े स्नेही तथा श्रद्धालु दम्पति श्री जेम्ज तथा कैथलीन यूबैंक से भी फ़कीर बाबा की भेंट हुई। बेडफ़ोर्ड वर्जीनिया के एक महान् कलाकार स्वर्गीय केन कनियर तथा उनकी कलाकार पत्नी मेरी को भी फ़कीर बाबा ने उनके घर रह कर आशीर्वाद दिया। इसी प्रकार एक अत्यन्त स्नेही

और परम श्रद्धालु कलाकार दम्पति स्वर्गीय राबर्ट विलिस तथा उनकी सुन्दर तथा प्रतिभाशालिनी पत्नी जोन के घर फ़कीर बाबा दो दिन रहे और उन्हें सत्संग दिया। अपनी तीसरी और चौथी यात्रा में फ़कीर बाबा का अनेक लोगों से सम्पर्क हुआ, जिनमें से फ़लोरीडा में सेरासोटा की ग्लोरिया एलब्रिटन, सेण्ट पीटर्जबर्ग के जाहन तथा उनकी पत्नी मारशा तथा ब्रेडिण्टन, फ़लोरीडा के श्री गिलबर्ट रिजगार्ड मुख्य हैं, फ़कीर बाबा ने अपने मिलने वाले सभी अमेरिकन सत्संगियों पर एक अमिट छाप छोड़ी है। उनके १९७६, १९७८ तथा १९८० में डा० परसराम अग्रवाल के साथ जो दौरे हुए उनमें सत्संगियों की संख्या बढ़ती चली गई। १९८० में वह अमेरिका में ही नहीं परन्तु इंगलैण्ड, जर्मनी तथा कैनेडा में भी सत्संग के लिए गये और सत्संगियों ने उनके सत्संग का लाभ उठाया। उनके इस दौरे से मुझे बहुत ही लाभ हुआ। क्योंकि इस बार वह मेरे घर में काफी समय रहे, मुझे उन्हें निकट से देखने का सुअवसर मिला। उनकी उपस्थिति से मुझे अलौकिक आनन्द ही नहीं मिला बल्कि बहुत से गूढ़ तत्त्वों

का भी ज्ञान मिला। मैंने जब उनके निकट बैठ कर उन्हें एक ही बात को बार-२ दोहराते हुए सुना, तो अचानक एक दिन मुझे उस गूढ़ तत्त्व का साफ़-२ पता चल गया; जिसको समझने के लिए बहुत से विचारकों, सन्तों और ऋषियों ने अपना सारा जीवन लगा दिया था। जिस सत्य को बताने के प्रयत्न में बड़े-२ दार्शनिकों, पण्डितों तथा धार्मिक नेताओं ने बड़े-२ पोथे लिख दिये हैं। इसी प्रकार पश्चिम के वर्तमान विचारक भी इसी सत्य को जानने के लिए खोज में लगातार काम कर रहे हैं। परन्तु अन्त में सभी के सभी यही कहते हैं कि परम सत्य अनन्त है; उसको पूर्णतया जाना नहीं जा सकता। इस परम सत्य की व्याख्या करते हुए प्रायः यह देखा गया है कि लगभग सभी ने नकारात्मक शब्दों का प्रयोग किया है। वेदों में इस व्याख्या को असत् कहा गया है, उपनिषदों में 'नेति नेति' कहा गया है, बाईबल में उसे 'सर्वथा भिन्न' कहा गया है, और योरुप के विश्वविख्यात आधुनिक दार्शनिक सार्त्र तथा हैडगर ने उसे 'कुछ नहीं' (Nothingness) कहा है। इन नकारात्मक व्याख्याओं को पढ़ने से

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

मनुष्य नास्तिक बन सकता है। क्योंकि यदि वह परम सत्य 'कुछ नहीं' है तो इसका अर्थ यह हुआ कि उसका अस्तित्व ही नहीं है और वह कल्पनामात्र ही है। भगवान् बुद्ध ने भी शून्यता शब्द का प्रयोग करके लोगों को इसी भ्रम में डाल दिया कि ईश्वर है ही नहीं।

परन्तु जब मैंने फ़कीर बाबा से उनके अपने अनुभव के आधार पर 'कुछ नहीं' की व्याख्या सुनी, तो मुझे ज्ञान हो गया कि 'कुछ नहीं' का अर्थ नास्तिकवाद नहीं है। फ़कीर बाबा की व्याख्या, इस प्रकार है :—

"अब मैं शब्द और प्रकाश से भी परे चला जाता हूं। सप्ताह में एक बार और कभी दो बार, जब मैं शब्द और प्रकाश से भी ऊपर चला जाता हूं, तो मैं उस वस्तु को देखता हूं, जो इस शब्द तथा प्रकाश का अनुभव करने वाली है। उस समय मैं उस अवस्था में पहुंच जाता हूं जहां पर ऐसा लगता है कि मैं चेतन के समुद्र का एक बुलबुला हूं। इस

स्तर पर मैं अपने आप को खो देता हूं। मैं नहीं रहता। वहां पर न देखने वाला होता है और न दिखने वाली कोई वस्तु। वहां 'कुछ नहीं' होता। परन्तु फिर मैं उस 'कुछ नहीं' की अवस्था से वापिस आ जाता हूं, तो इससे यह प्रमाणित होता है कि वह 'कुछ नहीं' शून्यता नहीं है। यदि उस अवस्था का कोई अस्तित्व ही नहीं अथवा वह 'कुछ नहीं' या बिलकुल खाली है, तो मैं उससे वापिस कैसे आता हूं।"

फ़कीर बाबा की इस गूढ़ सुन्दर व्याख्या से मेरा अपना 'कुछ नहीं' का संशय एक दम दूर हो गया और मुझे इसमें तनिकमात्र भी सन्देह नहीं रहा कि फ़कीर बाबा सद्गुरु अथवा परम सत्ता का अवतार हैं।

इस बार मेरी फ़कीर बाबा से और भी कई गूढ़ दार्शनिक और तत्त्व सम्बन्धी विषयों पर चर्चा हुई और उन्होंने मेरे रहे-सहे संशयों को भी दूर

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

कर दिया। उन्होंने मुझे कुछ वर्ष और अमेरि॰ में रहने की आज्ञा दी और कुछ और तत्व सम्बन्धी ऐसी पुस्तकें लिखने को कहा जिनसे पश्चिमीय सत्संगियों को भी वास्तविक सच्चाई का ज्ञान हो। मैंने भी यही अनुभव किया कि अब मुझे केवल बौद्धिक स्तर तक सीमित पुस्तकें न लिख कर ऐसी पुस्तकें लिखनी चाहिएँ, जिनमें फ़कीर बाबा की व्याख्याओं के आधार पर ईश्वर, धर्म; मनुष्य के सच्चे रूप और उसके जीवन के उद्देश्य के बारे में सरल भाषा में व्याख्याएँ की जायें। मैंने यह निश्चय किया कि सबसे पहले दो पुस्तकें लिखी जायं, जिनमें से पहली पुस्तक 'सत् पुरुष; चमत्कारी फ़कीर बाबा' और दूसरी 'सब धर्मों से परे धर्म' हो। फ़कीर बाबा ने मेरे इस विचार को पसन्द किया और मुझे इस कार्य को सम्पन्न करने का आशीर्वाद दिया।

परम दयालु फ़कीर बाबा का सन्देश केवल भारत के लिए ही नहीं, अपितु मानवता मात्र के लिए महत्त्व

रखता है। फ़कीर बाबा विश्वशान्ति, अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग और सभी धर्मों के मेल-जोल के लिए पूरा प्रयास कर रहे हैं। वह विश्वशान्ति के पथ-प्रदर्शक हैं और निराशा में आशा, अन्धकार में प्रकाश और विषमता में समता लाने वाले युग पुरुष हैं। उन्हें दाता दयाल जी ने विश्व में सच्चाई फैलाने और शिक्षा को इस प्रकार बदल देने का आदेश दिया था कि मानवता, धर्म के नाम पर टुकड़े-2 होने से बच जाय। दाता दयाल स्वयं १९११ में इसी उद्देश्य से अमेरिका आये थे। उनको पूरी आशा थी कि उनके परम शिष्य फ़कीर बाबा इस सच्चाई को विश्वकल्याण के लिए फैलायेंगे, क्योंकि वह यह जानते थे कि फ़कीर बाबा अपने सच्चे अनुभव के आधार पर ही जगत् का कल्याण करेंगे।

अगले अध्याय में यह बताया जायेगा कि किस प्रकार फ़कीर बाबा के युवावस्था काल तथा दाता दयाल से दीक्षा लेने के पश्चात् के चमत्कारी

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

अनुभवों के कारण (उन्हें) वह सच्चा ज्ञान मिला, जिसका वह मानवकल्याण के लिए प्रचार कर रहे हैं।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

अध्याय छठा

युवावस्था के चमत्कारी अनुभव और सच्चे ईश्वर को मिलने का आह्वान ।

इस पुस्तक को इस उद्देश्य से लिखा जा रहा है कि उस परम तत्त्व की सच्चाई खोल कर रख दी जाय, जिसे ईश्वर, ब्रह्म, परब्रह्म, परम पुरुष अथवा राधास्वामी दयाल कहा जाता है। ईश्वर के हज़ारों नाम हैं। पहले भी बताया जा चुका है कि फ़कीर बाबा ने परम सत्ता की व्याख्या अपने निजी आधार पर ही दी है। अब तो वह उस अवस्था पर पहुंच गये हैं, जहां वह शरीर, मन और आत्मा से भी ऊपर उठ गये हैं। जिन घटनाओं को हम चमत्कार कहते हैं, वे इन्हीं तीन स्तरों तक ही घटित होते हैं। फ़कीर बाबा इन चमत्कार व सिद्धियों के

स्तरों को पार कर चुके हैं। वह आश्चर्यों के आश्चर्य वाली उस सिद्ध अवस्था पर पहुंच चुके हैं, जिसे परम धाम कहा जाता है । वास्तव में यह अवस्था हर प्रकार की व्याख्या से परे है, हालांकि सभी सन्तों और सिद्धों ने भाषा द्वारा इसे स्पष्ट करने का बहुत प्रयत्न किया है। केवल सन्त ही इस उच्चतम अवस्था को पा सकता है या यूँ कहो कि जब व्यक्ति इस अवस्था को पाता है, तभी वह सच्चा सन्त कहलाता है।

जो लोग इस परम धाम को प्राप्त करना चाहते हैं उनके लिए फ़कीर बाबा का जीवन तथा उनका काम प्रेरणा का आदर्श है । भगवद्गीता में भी कहा गया है कि सत् पुरुष जैसा व्यवहार करता है, जन साधारण उसी का ही अनुकरण करते हैं। जिस आदर्श को वह महान् व्यक्ति अपने उदाहरण के द्वारा सामने रखते हैं, आम लोग उसी को ही जीवन पर लागू करते हैं। केवल इतना ही नहीं महान् व्यक्ति और सन्त अपने अनुभव से दूसरों को लाभ पहुंचाते हैं। उनके मन में यह प्रबल इच्छा रहती हैं कि वह दूसरों की

[शेष क्रमश: